IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

पूर्व मध्य काल का पर्यावरणीय अध्ययन (600 ईस्वी से 1100 ईस्वी तक)

सौरभ सिंह
शोधार्थी
प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म.प्र.

सारांश:-

पूर्व मध्य काल भारत में पर्यावरण विविध और क्षेत्रीय रूप से भिन्न था, जो भौगोलिक, जलवायु और मानवीय गतिविधियों से प्रभावित था। इस काल में भारत में गुप्त साम्राज्य का पतन हो चुका था, और विभिन्न क्षेत्रीय राजवंश जैसे पाल, चोल, चालुक्य और राष्ट्रकूट सत्ता में थे। इस अवधि में भारत में मानसूनी जलवायु प्रणाली प्रमुख थी, मानसून ने कृषि को प्रभावित किया, और अच्छे मानसून से समृद्धि बढ़ती थी, जबकि सूखा या अनियमित बारिश से अकाल पड़ता था। कुछ ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि इस काल में जलवायु अपेक्षाकृत स्थिर थी, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर सूखे या बाढ़ की घटनाएँ दर्ज की गईं।भारत के अधिकांश हिस्सों में घने जंगल थे, विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र, मध्य भारत (विंध्य और सतपुड़ा), और दक्षिण भारत में पश्चिमी घाट। ये जंगल वन्यजीवों जैसे बाघ, हाथी, हिरण और विभिन्न पक्षियों का निवास स्थान थे। जंगलों का उपयोग इमारती लकड़ी, औषधीय पौधों और शिकार के लिए किया जाता था।

मुख्य शब्द:- कृषि, अकाल, वन और उद्यान, सिंचाई आदि।

कृषि प्रणाली:-

इस काल में कृषि का महत्व बना रहा,कामंदक के अनुसार, जो लोग वार्ता (अर्थात पशुपालन, कृषि और व्यापार जैसे व्यवसायों) में पारंगत हैं, वे कभी भी आर्थिक रूप से गरीब नहीं हो सकते।[1]शुक्र ने बैंकिंग को भी वार्ता के अंतर्गत शामिल किया है। उन्होंने विस्तार से चर्चा की है कि परती भूमि की जुताई कैसे की जानी चाहिए और यह निर्धारित किया है कि शासक को ऐसे किसान से भू-राजस्व नहीं वसूलना चाहिए जो नई भूमि पर खेती करता है, जब तक कि उसका लाभ उस भूमि की खेती में किए गए निवेश से दोगुना न हो।[2] उन्होंने

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30454

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

सिफारिश की है कि राज्य को अपने अन्न भंडारों में सर्वोत्तम गुणवत्ता वाला, पूरी तरह सूखा, नया, चमकीले रंग का, और अच्छी गंध और स्वाद वाला संग्रहित करना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर, अगले तीन वर्षों में जब अन्न की कमी हो, लोग इसका उपयोग कर सकें।

भूमि को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था:-

उपजाऊ ,, बंजर (इरीना), परती (किला), रेगिस्तान (मरु) और सबसे उपजाऊ (मृसु या मेत्सना)। उन्होंने घास के मैदानों (सद्वाळा) का भी उल्लेख किया है, जिनमें नरकट होते हैं।नदवल), काली मिट्टी, पीली मिट्टी जो वर्षा जल से सिंचित होती थी, और जो नदी के पानी से सिंचित होती थी।

मेधातिथि (लगभग 825-900 ई.) में 17 प्रकार के अनाजों का उल्लेख है। मनोसोल्लास में 8 प्रकार के चावल और सात प्रकार की फलियों का उल्लेख है।[3] इस काल के ग्रंथों में गुप्त काल में प्रयुक्त सभी अनाजों, दालों, गन्ने, फलों और सब्जियों का उल्लेख है। मेधातिथि में यह भी कहा गया है कि एक वैश्य को कृषि विज्ञान में पारंगत होना चाहिए। उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि किस फसल के लिए किस प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता होती है और किस मौसम में किसी विशेष अनाज के बीज बोने चाहिए।

उपज को अधिक बढ़ाने के लिए खाद का प्रयोग भी किया जाता था। का प्रयोग का विवरण हर्ष द्वारा रचित हर्षचरित से प्राप्त होता है। हर्षचरित्र से पता चलता है कि कृषक बंजर पड़ी भूमि को भी खाद का प्रयोग करके उसको उपजाऊ बनाते थे। इस खाद को वह बैलगाड़ी से लादकर खेतों तक ले जाते थे।

इस काल में कृषि का अच्छा विकास हुआ था। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में कृषि पर दो ग्रंथ, कृषपाराशर[4]और वृक्षायुर्वेद,[5] लिखे गए।

अकाल

दशकुमारचरित में इस काल के अकालों का उल्लेख है।[6] इस काल की अन्य कृतियों, जैसे ब्रह्मान्नारदीय पुराण, त्रिशशती- शालकपुरुषचरित, अपराजित पृच्छा, लेखा-पद्धति और प्रबंधचिंतामणि में उल्लेख है कि अकाल के दौरान लोगों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उन्हें अपने निवास स्थान छोड़कर उन स्थानों पर जाना पड़ता था जहाँ गेहूँ और जौ, उत्तर भारत के दो स्थायी खाद्यान्न, उपलब्ध थे। कश्मीर में अकाल पड़ा जब वितस्ता नदी और महापद्म झील में बाढ़ आ गई और चावल की फसलें पूरी तरह नष्ट हो गईं।

इस काल में अकाल के कई कारण थे। ये थे अत्यधिक वर्षा[7],अनावृष्टि (सूखा), नदी में बाढ़, लालची व्यापारी और क्रूर शासक। इन सभी कारणों से खाद्यान्न की कमी हुई। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक सामंतवाद का उदय था। इसके कारण सामंतों द्वारा दमनकारी कराधान लागू किए गए। किसान मुश्किल से अपना गुज़ारा कर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

पाते थे।सामान्य परिस्थितियों में। अकाल पड़ने पर उनके पास अनाज खरीदने के लिए पैसे नहीं थे और उनमें से कई भूख से मर गए।

सिंचाई

कामंदक के अनुसार, जिस देश में सिंचाई के लिए केवल वर्षा जल पर निर्भर न होकर अच्छी फसलें और पर्याप्त खाद्यान्न हों, वहाँ लोग सुखी और समृद्ध रहते हैं। इससे पता चलता है कि लोग कृषि के लिए सिंचाई को बहुत महत्व देते थे। आठवीं शताब्दी ई. में जब कश्मीर में फसलों को भारी नुकसान हुआ था, तो... वितस्ता और महापद्म झील में बाढ़ के कारण ललितादित्य (740-776 ई.) ने पहियों की मदद से सिंचाई के लिए नदी के पानी का इस्तेमाल किया, जो नदी के पानी को उठाकर खेतों में डालते थे। जब नौवीं शताब्दी ई. में फिर से बाढ़ आई, तो अवंतीवर्मन (लगभग 855-883 ई.) के मंत्री सुय्या ने सिंचाई के लिए कई बांध और नहरें बनवाईं।[8] इसके परिणामस्वरूप कश्मीर में अकाल का खतरा टल गया और यह देश का एक समृद्ध क्षेत्र बन गया। 946 ई. के एक शिलालेख से हमें पता चलता है कि इस काल में सिंचाई के लिए चमड़े की बाल्टियों और फारसी पहियों का इस्तेमाल किया जाता था।

दक्षिण भारत में चोल शासकों ने किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने हेतु कावेरी नदी के किनारे कई बांध बनवाए। इन बाँधों में सबसे प्रसिद्ध श्रीरंग द्वीप के नीचे का बाँध है जो 1080 फीट लंबा और 40 से 60 फीट चौड़ा है।

वन और उद्यान

मानसोल्लास से हमें पता चलता है कि उत्तरकालीन चालुक्य शासकों के पास कई उद्यान थे। इन उद्यानों में कई छायादार कुंज, कृत्रिम तालाब, झीलें और नदियां ।इन उद्यानों में फूलदार पौधे और फलदार वृक्ष पाए जाते थे जो वर्ष के सभी ऋतुओं में खिलते और फलते थे।

राजपुत्र अपने परिवार के सदस्यों के साथ आनंद के लिए वनों में जाते थे। इन वनों में अनेक वृक्ष थे जो वसंत ऋतु में फूलों और फलों से लदे रहते थे।[9] इन वनों में कोई हिंसक पशु नहीं थे। इनमें सभी प्रकार के हिरण, मोर, कबूतर, छोटे जानवर और पक्षी थे जो राजपरिवार के सदस्यों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते थे।

पशुपालन

इस काल में भी हाथियों को युद्ध के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था। कामन्दक के अनुसार, युद्ध में एक शासक की सफलता काफी हद तक उसके हाथियों पर निर्भर करती थी। शुक्र का मत था कि ये हाथियों

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

भारी बोझ को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए उपयोगी थे। कामन्दक के अनुसार, एक शासक को अपने घोड़ों और हाथियों को नीराजन अनुष्ठान (पूजा के प्रतीक के रूप में उनके सामने दीपक जलाना और लहराना) करके पवित्र करना चाहिए। इससे उस काल की शाही सेनाओं में घोड़ों और हाथियों के महत्व का पता चलता है।

यशस्तिलक[10] में महाभैरव मंदिर के वर्णन और समरकइच्छहा[11]कथा में अनेक संदर्भों से यह स्पष्ट है कि क्षत्रियों को मांसाहार प्रिय था, लेकिन इस काल में अधिकांश भारतीय अहिंसा के समर्थक थे। इसलिए, वे पशुवध पसंद नहीं करते थे। सोमदेवता और अमितगति, दोनों जैन लेखकों का मत था कि देवताओं की पूजा, श्राद्ध, अतिथियों को भोजन कराने और रोगों के निवारण हेतु आवश्यक मंत्रों के लिए भी पशुओं का वध नहीं किया जाना चाहिए। इस काल के कुछ पुराणों में यह निर्धारित किया गया है कि कलियुग में बलि के लिए भी पशुवध आवश्यक नहीं है। कुछ स्मृतियों के लेखक मांसाहार के स्थान पर मस दाल बनाने का निर्देश देते हैं।[12] अरब लेखकों के अनुसार, इस काल में अधिकांश ब्राह्मण मांसाहार से दूर रहते थे। गुजरात के शासक कुमारपाल ने उन सभी को कठोर दंड दिया जो मांसाहार खाते थे। इस प्रकार अहिंसा के सिद्धांत ने इस काल में पशुपालन की प्रक्रिया में काफी मदद की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1 कामन्दक XIV

2 शुक्र नीतिसार,I.311,312

3 मेधातिथि मनुभाष्य VIII,320

4 L Gopal history of Agriculture in ancient india : पृ.3

5 वही.पृ.4

6 दशकुमारचरित,अध्याय.VI.पृ.157

7कथाकोश,पृ.161

8 राजतरंगिणी,IV.161

9 तिलकमजंरी,पृ.11

10 यशश्तिलक,पृ.330

11 समरकइच्छहा,पृ.210-213

12 प्रजापति स्मृति,152-153